International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

उत्तर भारत के तीर्थ स्थलों में यज्ञ, दान एवं श्राद्ध की परम्परा : एक अध्ययन

डॉ. प्रदीप सिंह[1], विजय कुमार यादव[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग टी. डी. पी. जी. कालेज, जौनपुर.
[2]शोध छात्र, इतिहास विभाग टी. डी. पी. जी. कालेज, जौनपुर.

यज्ञ कर्म–

पुराणों में यज्ञों के सम्पूर्ण अंगो का विस्तृत वर्णन किया गया है। विष्णुपुराण में यज्ञ को सन्मार्ग की संज्ञा में अभिहित किया है तथा विष्णु से उत्पन्न माना है।[1] इसी में अन्यत्र कहा गया है कि यह सम्पूर्ण पृथ्वी यज्ञ का फल है तथा यज्ञ भारतवर्ष में प्रतिष्ठित है।[2] यज्ञ के अभाव में धर्म क्षीण हो जाता है, तथा यह समस्त चराचर जगत हविष (यज्ञ) का ही परिणाम है।[3] यज्ञों से ही नक्षत्रों की भी प्रतिष्ठा है क्योंकि विष्णु का तृतीय पद (ध्रुव नक्षत्र) ही तीनों लोकों में प्रतिष्ठित है अर्थात् नक्षत्रों का स्वामी है, नक्षत्रों में ही मेघ एवं मेघ में ही वृष्टि सन्निहित है। वृष्टि से ही सम्पूर्ण जगत का संवर्द्धन होता है। वृष्टि का मुख्य कारण 'आज्य' (घृतादि यज्ञीय पदार्थ) है, तथा इसी से परितुष्ट होकर अग्नि वृष्टि को संदर्भ बनाते हैं, अग्नि को देवताओं का मुख कहा जाता है, अतः जो कुछ अग्नि में होम करते हैं, वह देवताओं तक पहुँचता है। इन्द्र मेघों के स्वामी हैं, अतः अग्नि हवि को इन्द्र तक पहुँचाकर वृष्टि में सहायता करते हैं।[4] वृष्टि से सम्पूर्ण जगत का कल्याण होता है।[5] यज्ञों को न करने वाले पापी कहे जाते हैं तथा यज्ञ को क्षति पहुँचाने वाले अथवा विघ्न डालने वाले भी नरकगामी होते हैं।[6] वायुपुराण में उल्लिखित है कि जिस प्रकार कलियुग में ब्रह्मा तथा द्वापर में विष्णु की पूजा होती है उसी प्रकार त्रेतायुग में यज्ञों की प्रतिष्ठा है।[7] यज्ञ की उत्पत्ति किन्हीं मत से शिव द्वारा भी मानी जाती है तथा यज्ञ वेदों के समान ही पवित्र है।[8] ब्रह्मपुराण के अनुसार यज्ञ एवं उसके विधानों का सृजन् जगत के जीवनार्थ देवी ने किया है अर्थात् यज्ञ से प्रसन्न होकर देवता अभीष्ट पूरा करते हैं।[9] मत्स्यपुराण में यज्ञ को ऋषियों एवं देवताओं द्वारा अनुमोदित तथा त्रेतायुग में सम्पन्न माना है।[10] पुराणों की मान्यता है कि जिस राष्ट्र में यज्ञों द्वारा विष्णु की आराधना की जाती है वहाँ सभी इच्छाएँ पूरी हो जाती है।[11] विष्णुपुराण में यज्ञ का उद्देश्य मित्र वरूण को प्रसन्न कर पुत्र की प्राप्ति करना कहा गया है।[12] इसी प्रकार युवनाश्व के पुत्र के लिए मुनियों ने यज्ञ किया था।[13] मत्स्यपुराण ने नल द्वारा पुत्र प्राप्ति हेतु अश्वमेघ यज्ञ का सम्पादन बताया है।[14] एक अन्य कथा के अनुसार कश्यप ऋषि ने अदिति को पुत्र प्राप्ति हेतु यज्ञ में प्रवृत्त होने का आदेश दिया था।[15] इस प्रकार स्पष्ट है कि पुराणों में यज्ञ को अधिकांशतः इच्छापूर्ति के उद्देश्य से ही वर्णित किया गया है। वांछित फल प्राप्ति हेतु अश्वमेघ, राजयूस, वाजपेय, अग्निष्टोम, दर्शपूर्णमास एवं अग्निहोत्र इत्यादि यज्ञों का अनेक राजाओं एवं ऋषियों द्वारा सम्पादन किये जाने का उल्लेख भी पुराणों में किया गया है। प्रयाग जो कि तीर्थराज की संज्ञा में अभिहित है उसके इस संज्ञा का कारण भी ब्रह्मा जी द्वारा किया गया प्रकृष्टयाग कहा गया है। इसका उल्लेख नारद एवं पद्म दोनो पुराणों में किया गया है।[16] विष्णु पुराण के अनुसार गया ब्रह्मा की पूर्व वेदी है जहाँ उन्होंने यज्ञो का सम्पादन किया था।[17] गय नामक असुर (जिसे विष्णु ने अपनी गदा से मारा था तथा जिसके नाम पर इस क्षेत्र का नाम गया पड़ा) ने भी 'श्वेतवराहकल्प' में गया में यज्ञ किया था।[18] गया में अश्वमेध यज्ञ भी किया जाता है। दक्षिणा पूर्वक अश्वमेध यज्ञ करने पर पितरों को अत्यधिक प्रसन्नता होती है।[19] पद्म एवं वामनपुराण के अनुसार कुरूक्षेत्र ब्रह्मा की यज्ञवेदी थी जिसे समन्तपंचक कहा जाता था। प्राचीनकाल में यहाँ भी ब्रह्मा द्वारा अनेक यज्ञ किये गये है।[20] उड़ीसा के जगन्नाथ तीर्थ क्षेत्र में अवन्ति के राजा इन्द्रद्युम्न ने अश्वमेघ यज्ञ किया था।[21] नर्मदा के उत्तरी तट पर स्थित भृगु कच्छतीर्थ में राजा बलि ने अश्वमेघ यज्ञ किया था।[22] वायुपुराण में दक्ष के अश्वमेघ यज्ञ का जो कि गंगाद्वार में सम्पन्न हुआ था, का उल्लेख किया गया है।[23] इसी प्रकार

राजा जनक एवं ऋषि कश्यप के द्वारा पुष्करतीर्थ में अश्वमेघ यज्ञ करने का उल्लेख भी प्राप्त होता है।[24] अविमुक्तक्षेत्र में सम्पादित यज्ञ कभी नष्ट नहीं होते हैं।[25] जामदग्न्यतीर्थ में इन्द्र ने अनेक यज्ञों का सम्पादन किया तथा देवों का स्वामित्व प्राप्त किया।[26] अधिसीमकृष्ण के शासन में ब्राह्मणों ने तीन वर्षों तक पुष्करतीर्थ में यज्ञ किया था।[27] तीर्थों में यज्ञायदि के विधान को महाभारत एवं विष्णुस्मृति ने भी समर्थन किया है। इन ग्रन्थों में भी पुत्रों द्वारा गया में अश्वमेघयज्ञ को सम्पन्न करना पितरो की कामना बताई गयी है।[28]

दान कर्म–

भारतीय धर्म में दान एक अत्यन्त पुण्यकर्म माना जाता है किसी भी धार्मिक कृत्य के सम्पादनोपरान्त दान एवं दक्षिणा का विधान किया गया है जिसके बिना वह कर्म पुण्य फलदायक नहीं होता। गरूड़ पुराण में दान का अत्यधिक माहात्म्य वर्णित करते हुए कहा गया है कि दान के प्रभाव से जब मनुष्य स्वर्ग जाने के लिए विमानों में बैठता है तब उसके लिए मृत्युलोक में किया गया धर्म पिता होता है, दया माता के रूप में, मधुर अर्थ को प्रकाशित करने वाली वाणी पत्नी होती है, उत्तमतीर्थ में किया गया स्नान उत्तम बन्धु वर्ग होता है।[29] तीर्थ में यदि स्वर्गदान, गोदान, भूमिदान, हस्ति एवं अश्व का दान करते समय मृत्यु हो जाय तो वह परम सौभाग्य की बात है।[30] दान न देने वाला व्यक्ति जन्मान्तर में दरिद्र होता है। अतः दान अवश्य करना चाहिए।[31] गया के वैतरणी (फल्गु) नदी में स्नान कर गोदानी व्यक्ति अपने इक्कीस कुलों का उद्धार करता है।[32] गया में पुत्रों के द्वारा अन्नदान पितरों की उत्कृष्ट कामना की गयी है।[33] दान करने से मनुष्य में त्याग की भावना का विकास होता है तथा मन में आत्मिकसुख का अनुभव होता है। नित्य दान करने वाले मनुष्य संयमी एवं परोपकारी होते हैं, तथा उन्हें उत्तमलोक की प्राप्ति होती है। 'वराह पुराण' में कर्म के आधार पर लोंको का निर्णय किया गया है, अर्थात् एक धर्म विमुख व्यक्ति जिसने अपनी धर्मव्रता पत्नी का त्याग कर दिया है, उसके पुत्र पौत्रादि के रहने पर भी वह रौरव नामक नरक में पड़ता है, इसके विपरीत जिसने स्वेच्छा से अनेक दुग्ध देने वाली उत्तम गायों का, सुवर्ण का, कन्याओं का एवं भूमि का दान किया गया है। वह साक्षात् देवता होकर इन्द्रलोक में स्थान प्राप्त करता है, इसी पुराण में अन्यत्र कहा गया है कि जो व्यक्ति सदा लोगो की आवश्यकता पूर्ति एवं हित साधन में लगे रहकर पृथ्वी का दान करता है वह स्वर्ग लोग में निवास करता है।[34] दोनो में गोदान की अत्यधिक महिमा कही गयी है क्योंकि गौएं दिव्य प्राणी है, तथा इनके सम्पूर्ण अंगो में सम्पूर्ण देवता निवास करते है। ये अपनी शरीर में अमृत धारण कर धरातल पर उसे बांटती हुई, तीर्थों में परम पवित्र तीर्थ हैं। इनके दान से प्राणी को परमपुण्य प्राप्त होता है।[35] विभिन्न वस्तुओं के दान का फल भी कथित है यथा– श्राद्ध के उपरान्त दान करने से मनुष्य पुत्रवान होता है। छत्रक, उत्तमगृह, चरणपादुका, रथ तथा वस्त्रदान से रूपवान, धनसम्पन्न एवं पुत्रवान होता है। अन्न एवं जल के दान से प्राणियों की समस्त कामनाएं पूर्ण होती है। हष्ट–पुष्ट बैल एवं हाथी का दान करने पर मनुष्य को स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। गरूड़ पुराण में वृषोत्सर्ग किए बिना ही पिण्डदान निष्फल होता है। अतः एकादशाह में अवश्य ही वृषोत्सर्ग करना चाहिए, क्योंकि ऐसा न करने पर सौ श्राद्ध करने पर भी प्रतत्त्व से मुक्त नहीं मिलती।[36] घृतदान से तेज एवं सुकुमारता, तेल के दान से प्राण में स्फूर्ति एवं शरीर में कोमलता प्राप्त करता है। शहद के दान से जन्मान्तर में समस्त रसों से युक्त होता है। 'दीप दान' से किसी भी जन्म में अन्धकार का कष्ट नहीं भोगता। फलदान से पुत्रवान एवं भाग्यशाली होता है। भयभीत प्राणियों को अभय प्रदान करने वाला मनुष्य समस्त कामनाओं को पूर्ण कर लेता है।[37] गरूड़ पुराण में चार प्रकार के दानों का वर्णन किया है– नित्य, नैमित्तिक, काम्य एवं विमल दान। फल की अभिलाषा न रखकर प्रत्युपकार की भावना से रहित होकर दिया गया दान 'नित्यदान' है। अपने पापों की शान्ति के लिए दिया गया दान 'नैमित्तिकदान' है। संतान, विजय, ऐश्वर्य एवं स्वर्ग प्राप्ति की भावना से किया गया दान 'काम्यदान' है तथा ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए दिया गया दान 'विमल दान' कहलाता है। यह दान अत्यन्त कल्याणकारी है।[38] ब्रह्माण्डपुराण में तीन प्रकार के दानो का वर्णन किया गया है–कनिष्ठ, ज्येष्ठ तथा मध्यम।[39] मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष होता है। जब प्राणी अपने कल्याण हेतु जीवन–मरण के बन्धन से मुक्त होने के उद्देश्य से जो वस्तुदान करता है वह 'ज्येष्ठदान' है। अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए दिया गया दान 'कनिष्ठदान' तथा सभी जीवों को करूणा वश दिया गया दान 'मध्यदान' होता है। कूर्मपुराण में भी

नित्य, नैमित्तिक, काम्य एवं विमल भेद से चार प्रकार के दामों का उल्लेख प्राप्त होता है। चतुर्थ प्रकार का दान (विमल दान) सभी दानो में सर्वश्रेष्ठ कहा गया है।[40] दान का प्रचलन मुख्यतया निर्धनो, दरिद्रों एवं बुभुक्षितों के लिए हुआ है। गया में वर्तमान वैतरणी नदी (फल्गुनदी) में स्नान एवं तर्पण कर गोदानी व्यक्ति अपने 21 कुलों का उद्धार करता है।[41] श्राद्ध के समय गया अथवा अन्य तीर्थों में दान के समय नीलवर्णी वृषभ का दान करने से श्राद्धकर्ता का उद्धार होता है।[42] पद्मपुराण के अनुसार गंगा–यमुना के संगम पर गाय, सुवर्ण, मणि तथा मुक्ता का दान करने से तीर्थवास सफल होता है।[43] प्रयाग में श्रोत्रिय, शान्त, धर्मरत तथा वेदों में पारंगत ब्राह्मण को पाटलवर्ण की 'कपिलगाय' दान करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।[44] प्रयाग में अपने वैभव के अनुसार दान करने का निर्देश दिया गया है। किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में दान उस तीर्थफल में वृद्धि करता है।[45] 'मत्स्यपुराण' ने भी गंगा–यमुना के संगम पर गाय, सुवर्ण, मणि तथा मुक्ता का दान करने से तीर्थवास सफल हो जाता है।[46] शुक्रतीर्थ में 'नीलवृषभ' का दान शिवलोक की प्राप्ति कराता है।[47] 'भागवतपुराणकार' ने एक साम्यवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए कहा कि जो देहधारी एवं मूर्ख लोग शास्त्र की दृष्टि से देने योग्य वस्तु का दान नहीं देते हैं अथवा दान नहीं लेते है वे दोनो सोचनीय है।[48] दान के महत्व को यद्यपि सभी पुराणों ने स्वीकार किया है तथापि पुराणों में ही कुछ ऐसे भी तथ्य हैं जिनको दान–धर्म के फल से भी कई गुना फल देने वाला कहा गया है। ब्रह्माण्डपुराण में गोकर्णतीर्थ के वर्णन प्रसंग में कहा गया है कि दान, होम, जप आदि से जो फल या पुण्य होता है उससे सहस्रगुना अधिक फल गोकर्ण के दर्शन मात्र से प्राप्त हो जाता है।[49] अन्नदान का अत्यधिक माहात्म्य कहा गया है तथा किसी भूखे व्यक्ति को अन्न प्रदान करने से दान करने वाले को सम्पूर्ण यज्ञो का फल प्राप्त होता है।[50] अन्य प्रसंग में दान अभीष्ट फलों का प्रदाता कहा गया है। दान से बढ़कर कोई अन्य धर्म नहीं है।[51] पुराणों के अनुसार अपने को सर्वाधिक प्रिय लगने वाली एवं न्याय से अर्जित वस्तु को गुणवानों के लिए समर्पित कर देना ही दान कहलाता है।[52]

श्राद्ध कर्मः–

पुराणों द्वारा श्राद्ध के विषय में विस्तृत विवरण दिया गया है। पुराणों में प्रायः प्रत्येक तीर्थ में श्राद्ध करने का निर्देश दिया है क्योंकि तीर्थस्थल में सम्पादित श्राद्धकर्म अत्यधिक फलदायक होता है। श्राद्ध करने योग्य तीर्थस्थलों की विस्तृत सूची पद्मपुराण के उत्तरखण्ड के एक सौ पचहत्तरवें तथा एक सौ इक्यासीवें अध्याय में, वराहपुराण के 13वें अध्याय में श्राद्ध विधि एवं श्राद्धयुक्त स्थलों का वर्णन है, गरूड़पुराण के प्रथम खण्ड (प्रेतकल्प) में भी श्राद्ध विधि का वर्णन किया गया है। श्राद्ध सम्बन्धी तीर्थसूचियों में गया, ब्रह्मकपाली (बद्रीनारायण), कपिलधारा (नर्मदातट) आदि तीर्थ श्राद्ध के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं। श्राद्ध–विधि के विषय में कहा गया है कि श्राद्ध में अर्घ्य, आवाहन, ब्राह्मांगुष्ठ निवेशन, विकिर तथा तृप्ति विषयक कर्म नहीं किये जाते है। श्राद्ध कराने वाले ब्राह्मण का भी ज्ञान परीक्षण नहीं करना चाहिए। तीर्थयात्रा के समय यदि मार्ग में कोई नदी मिल जाये तो उसे पार करते समय पितरो का तीव्र स्वर में नामोच्चारण करना चाहिए एवं उन्हें उस नदी के जल से तर्पण करना चाहिए।[53] तर्पण में तिल का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।[54] गया को पितृतीर्थ कहा जाता है तथा वहां आचारित श्राद्ध अक्षय होता है।[55] गयातीर्थ में जाने के लिए घर से निकलने मात्र से चलने वाले का एक–एक कदम पितरों का स्वर्गारोहरण के लिए एक–एक सोपान बनता जाता है।[56] गया के प्रेतशिला में पिण्डदान करने वाले पितरों का आवाहन कर वरूणा नदी एवं महानदी के अमृतमय जल से पितरों का तर्पण करना चाहिए।[57] गया में पितरों के लिए श्राद्ध तथा पिण्डदान आदि सम्पन्न करने वालों की स्वंय भी मुक्ति हो जाती है।[58] गरूड़ पुराण में ही अन्यत्र कहा गया है कि गया के वैतरणी नदी में स्नान कर पितरों को पिण्डदान एवं विप्रों को गोदान करता है वह अपने कुल के 21 पीढ़ियों का उद्धार करता है।[59] गया में दिन अथवा रात्रि किसी भी समय में श्राद्ध किया जा सकता है। वाराणसी, सोन नदी तथा महानदी पुनपुना के तट पर श्राद्ध करके व्यक्ति अपने पितृजनों को स्वर्ग ले जाता है। गया के तीर्थों में श्राद्धकर्म करते समय कव्यवाह, सोम, यम, अर्यमा, अग्निष्वात् बर्हिषद् तथा सोमपा नामक इन पितृदेवताओं की आराधना करके ही पितरों की पिण्डदानादि अर्पित करना चाहिए।[60] गाय में श्राद्ध कुल पांच दिनों में सम्पन्न होता है, प्रथम दिन यात्री फल्गुतीर्थ में स्नान कर पिण्डदान करता है तथा गदाधर भगवान विष्णु का दर्शन करता है।

द्वितीय दिन धर्मारण्य एवं मतंगवापी में जाकर पिण्डदान करता है साथ ही ब्रह्मतीर्थ, कूप एवं यूप के मध्य श्री श्राद्ध व पिण्डोदक कृत्य करता है। तृतीय दिन ब्रह्महृद तीर्थ में स्नान एवं तर्पण करना चाहिए। चतुर्थ दिन फल्गु में स्नान कर देवताओं का तर्पण एवं तत्पश्चात् गयातीर्थ में रूद्रपदादि तीर्थों में पितरों का श्राद्ध करना चाहिए। पांचवे तथा अंतिम दिन गदालोलतीर्थ में स्नान अक्षयवट के नीचे पिण्डदान करना चाहिए। वहां श्राद्ध करने के पश्चात् पितामह (ब्रह्मा) का दर्शन कर मनुष्य अक्षय लोकों की प्राप्ति करता है साथ ही अपने सौ कुलों का उद्धार करता है।[61] गया तीर्थ में नवदैवत्य एवं द्वादशदैवत्य नामक श्राद्ध किया जाता है। अन्वष्टका तिथियों में, वृद्धिश्राद्ध में गया में तथा मृत्युतिथि में माता के लिए पृथक रूप से श्राद्ध किया जाता है। अन्यत्र तीर्थों में पिता के साथ ही माता का भी श्राद्ध किया जाता है।[62] गयाशिर में शमीपत्र–प्रमाण के बराबर पिण्डदान करना चाहिए क्योंकि इससे पितृगण देवत्व को प्राप्त करते है।[63] वित्त से परिपूर्ण समग्र पृथ्वी का तीन बार दान करने से जो फल प्राप्त होता है, वही फल गयाशिर तीर्थ में श्राद्ध करने पर प्राप्त होता है।[64] इसके अतिरिक्त कालसर्पि नामक महान् तीर्थ में अक्षयश्राद्ध के इच्छुक व्यक्ति को नित्य प्रति श्राद्ध करना चाहिए।[65] शालिग्राम क्षेत्र में किया गया श्राद्ध भी अक्षीण होता है।[66] कालंजर, दर्शाण, नैमिष, कुरूजांगल तथा वाराणसी में मनुष्य को सक्रिय होकर श्राद्ध करने का निर्देश दिया गया है।[67] विष्णु पुराण में भी पितरों को अपने वंशजों द्वारा (पुत्र–पौत्रादि के द्वारा) गया में पिण्डदान के अभिलाषा की चर्चा की है।[68] प्रभासक्षेत्र में पितरों का तर्पण एवं सत्पात्र को दिया गया दान अत्यधिक माहात्म्य रखता है।[69] प्रयागतीर्थ के प्रतिष्ठानपुर में भी श्राद्धकर्म का उल्लेख पद्मपुराण में उपलब्ध है।[70] गया के रामतीर्थ अथवा रामशिला में स्वंय भगवान राम ने अपने पितरों का पिण्डदान दिया था।[71] नर्मदा नदी को पितरों की पुत्री कहा गया है तथा उसके तट पर सम्पादित श्राद्ध–कर्म अक्षय फल प्राप्त करता है।[72] नेपाल में स्थित मुक्तिनाथ क्षेत्र के त्रिवेणी संगम पर त्रिजलेश्वर एवं कामिक स्थल हैं जिन पर श्राद्धकर्म करने पर पितर अत्यधिक प्रसन्न होते है। इन्द्रकीलपर्वत पितरों के लिए अत्यन्त पवित्र स्थल माना गया है।[73] कुरूक्षेत्र (कुरूजांगल) में श्राद्ध का अत्यधिक माहात्म्य है।[74] मथुरा के अक्रूरतीर्थ में श्राद्ध एवं वृषोत्सर्ग करने वाले पुरूष अपने कुल के पितरों को तार देते हैं।[75] नारदपुराणकार ने जगन्नाथ क्षेत्र के इन्द्रद्युम्नसरोवर एवं पंचतीर्थ में श्राद्ध व तर्पण करने पर कुल के 21 पुरूषों के उद्धार की बात कही है।[76] श्राद्ध एवं हवन के समय एक हाथ से वस्तुओं को अर्पित किया जाता है जबकि तर्पण में दोनो हाथों की अंजलि बनाकर गोत्र एवं नाम का उच्चारण करते हुए मौनभाव से जलांजलि देने का विधान किया गया है।[77] इस प्रकार तीर्थों में श्राद्धादि पितरों के प्रति कर्म को संपादित करने का रहस्य यहीं है कि व्यक्ति तीर्थ जैसे पवित्र क्षेत्र में निर्मल मन से पितरों को देवता मानकर उनकी अराधना एवं पूजा कर सके। वस्तुतः तो गया ही प्रमुख श्राद्धतीर्थ है तथा वहाँ पहुँचकर यात्री सर्वप्रथम पुनपुनानदी के तट पर मुण्डन कराते है। तत्पश्चात् गया के किसी ब्राह्मण का चरण पूजते हैं इससे पितरों को स्वर्ग प्राप्ति होती है।[78] पुराणों में गया कि अतिरिक्त अन्य तीर्थस्थलों में भी पिण्डदान एवं श्राद्ध का उल्लेख किया है जिनकी कोई क्रमबद्धसूची नहीं उपलब्ध है तथापि किंचित अन्य तीर्थस्थलों का विवरण अधोलिखित है–

(1) देव प्रयाग (अलकनंदा भागीरथी– संगम) (2) त्रियुगी नारायण (सरस्वती–कुण्ड) (3) (मदमहेश्वर) (मध्यमेश्वर) (4) रूद्रनाथ (5) बद्रीनाथ (ब्रह्मकपालशिला) (6) हरिद्वार (हरि की पैड़ी) (7) कुरूक्षेत्र (पेहावा) (8) पिण्डारक तीर्थ (9) नैमिषरण (10) हत्याहरण तीर्थ (11) ब्रह्मावर्त (बिठूर) (12) काशी मणिकर्णिका (13) अयोध्या (14) परशुरामकुण्ड (15) भुवनेश्वर (उड़ीसा) (16) उज्जैन (17) अमरकण्टक (18) नासिक (19) चन्द्रभागा (षष्ठरपुर) (20) लोहार्गल (21) पुष्कर (22) तिरूपति (23) सर्वतीर्थ सरोवर (शिवकांची) (24) श्रीरंगम (कावेरी तट) (25) रामेश्वरम् (लक्ष्मणतीर्थ) (26) धनुष्कोटि (27) दर्भशयनम् (28) सिद्धपुर (29) द्वारकापुरी (30) नारायणसर (31) प्रभासपाटन (गुजराज) (32) शूलपाणि (शूलपाणेश्वर)

अतः तीर्थस्थल व्यक्ति के अपने पुण्य एवं स्वर्ग की प्राप्ति के साथ–साथ पितरों के भी स्वर्गमन के सहायक है। इस प्रकार श्राद्ध तीर्थों का एक अतिविशिष्टकर्म माना जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1–सतश्चासमंजसचरितानुकारितानुकारिभिस्सागरैरपध्वस्तयज्ञादिसन्मार्गे। विष्णुपुराण 4/4/12 एवं त्वत्तें यज्ञः सर्वहुतः पृषदाज्यं पशुर्द्विधा। विष्णु पुराण 1/12/59.

2–इज्याफलस्य भूरेषा इज्या चात्र प्रतिष्ठिता– विष्णु पुराण 2/7/11.
3–हविषं परिणामोऽयं यदेतदखिलं जगत्। विष्णु पुराण 1/13/25.
4–ततश्चाज्याहुतिद्वार पोषितास्ते हविर्भुजः वृष्टः कारणतां यान्ति विष्णु पुराण 2/8/106–109.
5–यज्ञैराप्यायिता देवा वृष्ट्युत्सर्गेण वै प्रज्ञाः आप्यायन्ते धर्मज्ञ यज्ञाः कल्याणहेतवः। विष्णु पुराण 1/6/8
6–येषां तु कालसृष्टोऽसौ पापविन्दुर्महामुने। चैतः सु ववृधे चक्रुस्ते न यज्ञेषु मानसम्।
मखहा ग्रामहन्ता च यान्ति वैतरणीं नरः। विष्णु पुराण–1/29 एवं 2/6/24.
7–ब्रह्मा कृतयुगे पूज्यस्त्रेतायां यज्ञ उच्यते। द्वापरे पूज्यते विष्णुरहम्पूज्यश्चतुर्ष्वपि। वायु पुराण–32/21
8–अत्र यज्ञ प्रवृत्तिस्तु जायते हि महेश्वरात्। वेदैस्तुल्याः सर्वयज्ञक्रियास्तु यज्ञे जप्यं ज्ञानिनामाहुरग्रंय।।
वायु पुराण–32/16 एवं 21.
9–इष्टानि ते प्रदास्यन्तिपुष्टास्तु यज्ञ भाविताः। ब्रह्म पुराण–4/6/53–55.
10–ऋषिभिः क्रतवः प्रोक्ता देवैश्चापि यथाक्रमम्। मत्स्य पुराण–142/54–56 एवं 112/12.
11–यज्ञैर्यज्ञेश्वरोयेषां राष्ट्रे सम्पूज्यते हरि। सर्वेप्सितोवाप्ति ददाति नृपभूभृताम्।। विष्णु पुराण 1/13/19.
12–इष्टिं च मित्रावरूणर्योमनुः पुत्रकामश्चकार। विष्णु पुराण 4/1/18.
13–तेनेष्ट्वां सुलोकं नः प्राप्स्यसि त्वं नराधिप वायु पुराण–91/44.
14–अश्वमेंघ तु पुत्रार्थमाजहार नरोत्तमः। विष्णु पुराण–66/64.
15–करोत्विष्टिं पुत्रीयाम्। मत्स्य पुराण– 7/33.
16–पद्म पुराण सृ0ख0–46/15 एवं 6/23/27–35, 41/5, नारद पुराण, उ0–63/95
17–विष्णु पुराण–22/20.
18–गरूड़ पुराण–82/2–6, वामन पुराण 105/7,8.
19–पद्म पुराण सृ0ख0 1–38/7 एवं 5/11/62.
20–पद्म पुराण–4/17/7 एवं वायु पुराण–22/18–20.
21–ब्रह्म पुराण–43 एवं नारद पुराण उ0–52/41–93 एवं 53–57.
22–भागवत पुराण–8/12/2.
23–पुरा हिमवतः पृष्ठे दक्षो वै यज्ञमारभत्। गंगाद्वारे शुभे देशे ऋषि सिद्धि निसेविते। – वामन पुराण–30/94.
24–कश्यपस्याश्वमेघोऽभूत पुण्यो वै पुस्करे पुरा। वामन पुराण– 67/53 एवं ब्रह्म पुराण–3/5/7.
25–जप्तं दत्तं हुतं सर्वभवतिचाक्षयम्। मत्स्य पुराण–181/17.
26–यत्रेष्ट्वा बहुभिर्यज्ञैरिन्द्रो देवाधियोऽभवत्। मत्स्य पुराण 195/35.
27–दुरापं दीर्घसत्रं वै त्रीणिवर्षाणि पुष्करे।– मत्स्य पुराण–50/67.
28–यजेत् वाश्वमेधेन। महाभारत, व0प0–87/11, वि0स्म0–85/67.
29–दान प्रभावेण विमानसंस्थितो धर्मः पिता मातृदयानुरूपिणी।
वाणी कलत्रं मधुरार्थभाषिणी स्नानं सुतीर्थे च सुबन्धुवर्ग।। गरूड़ पुराण।
30–दत्वां वा स्वर्णदानानि–गो–मही–गज–वाजिनः। तीर्थ यदि लभेद् यस्तु मृत्युकाले स भाग्यवान।
गरूड़ पुराण–36/23.
31–शिक्षयन्ति च याचन्ते देहीति कृपणा जनाः। अवस्थेयमदानस्यः मा भूदेवं भवानपि। गरूड़ पुराण–109/25.
32–स्नातो गोदो वेतरण्यां त्रिसत्पकुलमुद्धरेत्। वामन पुराण–112/26.
33–गयां यास्यतियः पुत्रः सः नस्त्राता भविष्यति। गयां गत्वान्नदाता यः पुत्रस्तेन पुत्रिणः।।
वामन पुराण 105/9–10.
34–दारत्यागी त्वधर्मिष्ठः पुत्रपौपविवर्जितः। क्षिप्तं रौरवे ह्येनं क्षपयन्तु महौजसः।। वराह पुराण–205/5 एवं
11, 12, 14, 28, 29, 30.
35–वराह पुराण–206/29–35 एवं पद्म पुराण–1/48.
36–एकादशाह प्रेतस्य यस्य नोत्सृज्यते वृषः। प्रतत्त्वं सुस्थिरं तस्य दत्तैः श्राद्धशतैरपि।। गरूड़ पुराण 13/8.
37–वराह पुराण–207/38/42. गरूड़ पुराण–13/20–21.
38–वामन पुराण–51/8–11.
39–तत्र नैश्रयसे ज्येष्ठं कनिष्ठं स्वार्थ सिद्धये। कारूण्यात्सर्वभूतेषु संविभागस्तु मध्यमः।। ब्रह्म पुराण 2/32/56
40–नित्यनैमित्तिकं काम्यं त्रिविधं दानमुच्यते। चतुर्थ विमलं प्रोक्तं सर्वदानोत्तमोत्तमः।। कूर्म पुराण 2/64/4.
41–स्नातो गोदो वैतरण्यां त्रिसत्पकुलमुद्धरेत्। वामनपुराण–112/26.

42–ग्यायान्च वृषोत्सर्गात् त्रिःसपृकुलमुद्धरेत। यजेत् वाऽअश्वमेधेन नीलं वा वृषमुत्सृजेत। पद्म पुराण, सृ0खं–1/38/17 एवं 5/1/62, गरूड़पुराण–84/33–34 तथा नारद पुराण, उ0–44/5–6

43–कर्मणा मनसा वाचा सत्यधर्मप्रतिष्ठितः। गंगायमुनयोर्मध्ये यस्तुं दानं प्रयच्छति।।
सुवर्णं मणिमुक्तां वा यदि धान्यं प्रतिग्रहम्। स्वकार्ये पितृकार्ये व देवताभयर्चनेऽपि वा।–
पद्म पुराण–42/14–15.

44–कपिलां पाटलवर्णा यस्तु धेनुं प्रयच्छति।
प्रयागे श्रोत्रियं शांन्त धर्मज्ञं वेद पारगम्।– पद्म पुराण–44–3, 8 एवं 42/17

45–तत्रदानं प्रकर्त्तव्यं यथा विभम संभवम्।
तेन तीर्थ फलं चैव वर्धते नात्र संशयः।। पद्म पुराण– 43/10 एवं मत्स्य पुराण– 106/10.

46–गंगा यमुनयोर्मध्ये यस्तु गां संप्रचच्छति। सुपर्णमणिमुक्ताश्च यदि वान्यत परिग्रह सफलं तस्य तत्तीर्थ यथावत् पुण्यं माप्नुयात्।– मत्स्य पुराण–105/13–14

47–पूजितं देवराजेन देवैरपिनमस्कृतम्। तत्र स्नात्वा नरोराजन्दानं दत्त्वा तु कांचनम।।
अथवा नीलवर्णाभं वृषभं यः समुत्सृजेत्। वृषभस्य तुरोमाणि तत्प्रसूति कुलेषु च।।– मत्स्य पुराण–191/66–67

48–भागवत पुराण–4/27/25.

49–दान होम जपाद्यं ये पितृदेव द्विजार्चनम्। अन्यस्मात् कोटि गुणितं भवेत्मस्न्फिलं नृप।।– ब्रह्म पुराण 3/56/20.

50–दानस्तु लभते कामन्प्राकाश्यंधनमेव च। दानधर्मरतो नित्यं शीलश्रुतपरायणः।। ब्रह्म पुराण– 3/16/20 एवं 3/70/43.

51–यद्यंदिष्टतमं द्रव्यं न्यायैनैवागतं च यत। तत्तद्गुणवते देयमित्येतत् दानलक्षणम्।। ब्रह्म पुराण– 2/32/54.

52–अर्थानामुदितेपात्रे श्रद्धया प्रतिपादनम्। दानमित्यभिनिर्दिष्टं भुक्तिमुक्ति फलप्रदम।। कूर्म पुराण–2/26/2.

53–जलं प्रतमणिश्चं कीतयेत् प्रपितामहान्। नदीमासाद्य कुर्वीत पितृणाम् पितृतर्पणम्।।
कुलेशमांक स जन्तु स्याद्योनोघाद्जलान्जलिम्। नदीषु बहुतोयासु शीतलासु विशेषतः।।
ब्रह्म पुराण– 3/12/27.

54–तीर्थे–तीर्थे विशेषे च गंगायाम् प्रेतपक्षके। निषिदेऽपि दिने कुर्यात् तर्पणं तिलमिश्रतं।। स्कन्द पुराण रे0ख0–38/52.

55–अक्षयं फलमाप्नोति ब्रह्मलोकं नयेत् पितृन्– गरूड़ पुराण –83/39–40.

56–गृहाच्चलिसमात्रस्य गयायांगमनं प्रति। स्वर्गारोहण सोपानं पितृणां तु पदे–पदे।। गरूड़ पुराण–84/3.

57–गरूड़ पुराण–85/2/22, 83/ पद्म पुराण, सृ0ख0–38/5.

58–वधवन्धविनिर्मुक्तश्चान्ते मोक्षमवाप्नुयात्। श्राद्धपिण्डादिकर्तारः पितृभिर्ब्रह्मलोकगाः।।
गरूड़ पुराण–83/62–63

59–या सा वैतरणी नाम त्रिषु लोकेषुविश्रुता। सावतीर्णा गयाक्षेत्रे पितृणां तारणाय हि।। गरूड़ पुराण–84/5 एवं 12–14, गरूड़ पुराण– 84/33–34

60–गरूड़ पुराण, 84/5 एवं 12–14.

61–वटमूलं समासाद्य शाकेनोष्णोदकेन वा। एकस्मिन् भोजिते विप्रे कोटिर्भवतिभोजिताः।।
गरूड़ पुराण 82/15,17,18, 83/22–23.

62–श्राद्धं तु नवदैवत्यं कुर्याद्द्वादशदैवतम्। अन्वष्टकासु वृद्धो च गयायां मृतवासरे।।
अत्रमातुः पृथक् श्राद्धमन्यत्र पतिना सह0.....। – गरूड़ पुराण–84/24–25.

63–स तत्फलामवाप्नोति कृत्वा श्राद्धं गयाशिरे। शमीपत्र प्रमाणेनपिण्डं दद्याद् गयाशिरे।।
पितरो यान्ति देवत्त्वं नात्र कार्या विचारणा। गयाशीर्षे तु यः पिण्डान्नाम्ना येषं तु निर्वपेत्।। तथा नरकस्था दिवं यान्ति स्वर्गस्था मोक्षामाप्नुयुः।। – गरूड़ पुराण– 84/27 एवं 30.

64–त्रिर्वित्तपूर्णा पृथिवीं दत्त्वां यत्फलमाप्नुयात्।– गरूड़ पुराण– 84/25.

65–काश्यपस्य महातीर्थे कालसर्पिरन्तिश्रुतम्। तत्र श्राद्धानि देवानि नित्यमक्षयमिच्छता।। वामन पुराण– 77/87 एवं ब्रह्म पुराण 3/13/69.

66–अक्षयं तु भवेत् श्राद्धं शालग्रामे समन्ततः।– वामनपुराण 77/78 एवं ब्रह्म पुराण– 3/13/99.

67–क्लंजरे दशार्णायाम् नैमिषे कुरूजांगले। वाराणस्यां नगर्या तु देयं श्राद्धं नित्यतः ।।– वामनपुराण –77/93 ब्रह्म पुराण– 3/ 13/100–101.

68–अपि नस्ते भविष्यनित कुले सन्मार्गशीलिनः गयामुपेत्यये पिण्डान् दास्यन्त्यस्माकमादरात्।। विष्णु पुराण–3/16/18 एवं 3/15/22,40.
69–भागवत पुराण–11/35/38.
70–पद्म पुराण आ0ख0–43/80 एवं नारद पुराण, उ0–63.
71–नारद पुराण, उ0–45/8–9.
72–पितृणां दुहिता पुण्यानर्मदासरितांवरा। तत्र श्राद्धानि दत्तानि अक्षयाणि भवन्युत्।। वामन पुराण–77/32.
73–भागवत पुराण–5/19/16.
74–भागवत् पुराण–3/1/24 एवं 10/86/20. कूर्म पुराण 2/20/33.
75–वराह पुराण–161/74.
76–नारद पुराण उ0–58/60–61 एवं 55/23–32.
77–नारद पुराण उ0–56/62–64.
78–वाराणस्या कृतश्राद्ध तीर्थे शोणनदे तथा। पुनःपुना महानद्यां श्राद्धं स्वर्ग पितृननयेत्।। गरूड़ पुराण–22/18–19